International Journal of Academic Excellence and Research (IJAER)
e-ISSN: 3107-3913 || Publication Impact Factor (I2OR) : 2.015
Vol. 02, No. 01, January-March, 2026, pp 200-205
© Copyright by MGM Publishing House (MGMPH)
www.mgmpublications.com

भारतीय दर्शन एवं आधुनिक कैरियर निर्देशन का समन्वित मॉडलः त्रिगुण एवं स्वधर्म सिद्धांत के संदर्भ में

अमरेंद्रजीत सिंह परिहार[1*] | डॉ. ईश्वर प्रसाद यदु[2]

[1]शोधार्थी, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)।
[2]शोध निर्देशक, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)।

[*]**Corresponding author:** singhamarenderjeet@gmail.com

Citation: परिहार, अमरेंद्रजीत एवं यदु, ईश्वर (2026). भारतीय दर्शन एवं आधुनिक कैरियर निर्देशन का समन्वित मॉडलः त्रिगुण एवं स्वधर्म सिद्धांत के संदर्भ में. International Journal of Academic Excellence and Research, 02(01), 200–205. https://doi.org/10.62823/IJAER/2026/02.01.187

सारः *वर्तमान समय में कैरियर चयन की प्रक्रिया अत्यंत जटिल हो गई है। विद्यार्थियों के सामने असंख्य कैरियर विकल्प उपलब्ध हैं, किंतु सही निर्णय लेने में वे अनेक बार भ्रमित हो जाते हैं। सामाजिक अपेक्षाएँ, आर्थिक दबाव और प्रतिस्पर्धा के कारण अनेक विद्यार्थी अपनी वास्तविक रुचि एवं व्यक्तित्व प्रवृत्तियों को समझे बिना कैरियर का चयन कर लेते हैं। परिणामस्वरूप कार्य–असंतोष, मानसिक तनाव और पेशेगत असंतुलन की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। भारतीय दर्शन में वर्णित त्रिगुण सिद्धांत (सत्त्व, रजस, तमस) तथा स्वधर्म सिद्धांत मानव व्यक्तित्व और कर्म के संबंध को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करते हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य इन सिद्धांतों के आधार पर कैरियर मार्गदर्शन का एक समन्वित मॉडल प्रस्तुत करना है। अध्ययन में 100 विद्यार्थियों पर SRT प्रोफाइलिंग मापनी तथा कैरियर विकल्प जागरूकता प्रश्नावली के माध्यम से आँकड़े एकत्रित किए गए। प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण प्रतिशत, औसत तथा सहसंबंध तकनीकों के माध्यम से किया गया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि त्रिगुण और कैरियर जागरूकता के मध्य भी सार्थक संबंध प्राप्त हुआ। अध्ययन के आधार पर एक त्रिगुण आधारित कैरियर मार्गदर्शन मॉडल प्रस्तुत किया गया है, जो विद्यार्थियों को उनकी स्वाभाविक प्रवृत्तियों के अनुरूप कैरियर चयन में सहायता प्रदान कर सकता है।*

Article History:
Received: 25 February, 2026
Revised: 13 March, 2026
Accepted: 23 March, 2026
Published Online: 30 March, 2026

शब्दकोशः
त्रिगुण सिद्धांत, स्वधर्म, SRT प्रोफाइलिंग, कैरियर मार्गदर्शन।

प्रस्तावना

मानव जीवन में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के समग्र विकास की प्रक्रिया है। शिक्षा व्यक्ति के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास को दिशा प्रदान करती है। आधुनिक समाज में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य विद्यार्थियों को उपयुक्त कैरियर चयन के लिए तैयार करना भी है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में कैरियर विकल्पों की संख्या अत्यधिक बढ़ गई है। सूचना प्रौद्योगिकी, प्रबंधन, चिकित्सा, शोध, स्टार्टअप और डिजिटल उद्योगों के कारण युवाओं के सामने अनेक अवसर उपलब्ध हैं। किंतु विकल्पों की अधिकता निर्णय प्रक्रिया को जटिल बना देती है।

[*] *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by MGM Publishing House. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

अनेक विद्यार्थी सामाजिक दबाव, आर्थिक अपेक्षाओं और प्रतिष्ठा के कारण ऐसे व्यवसायों का चयन कर लेते हैं जो उनकी वास्तविक रुचि और व्यक्तित्व के अनुरूप नहीं होते। इससे दीर्घकालिक असंतोष और मानसिक तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है।

भारतीय दर्शन में मानव जीवन को एक समग्र दृष्टिकोण से देखा गया है। यहाँ व्यक्ति की आंतरिक प्रकृति और उसके कर्म के बीच सामंजस्य को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। इस संदर्भ में त्रिगुण सिद्धांत और स्वधर्म की अवधारणाएँ विशेष महत्व रखती हैं।

त्रिगुण सिद्धांत के अनुसार प्रकृति के तीन मूल गुण होते हैं–

- सत्त्व – ज्ञान, संतुलन और विवेक
- रजस – क्रियाशीलता और महत्वाकांक्षा
- तमस – स्थिरता और संरचनात्मक कार्य

प्रत्येक व्यक्ति में ये तीनों गुण विभिन्न अनुपातों में उपस्थित होते हैं और यही गुण उसकी प्रवृत्तियों, रुचियों और व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

स्वधर्म सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति को अपनी स्वाभाविक प्रकृति और क्षमताओं के अनुरूप कर्म करना चाहिए। जब व्यक्ति अपने स्वभाव के अनुरूप कार्य करता है, तो वह अधिक संतोष और संतुलन का अनुभव करता है।

इसी आधार पर प्रस्तुत शोध त्रिगुण एवं स्वधर्म सिद्धांत के आधार पर कैरियर मार्गदर्शन का एक मॉडल प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

कैरियर चयन और व्यक्तित्व प्रवृत्तियों के मध्य संबंध को समझने के लिए अनेक विद्वानों ने विभिन्न सिद्धांत और मॉडल प्रस्तुत किए हैं। आधुनिक कैरियर मनोविज्ञान में यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि व्यक्ति का व्यक्तित्व, उसकी रुचियाँ, क्षमताएँ और मूल्य उसके कैरियर निर्णय को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। जब व्यक्ति के व्यक्तित्व गुण और उसके कार्य वातावरण के बीच सामंजस्य होता है, तब वह अपने कार्य में अधिक संतोष, उत्पादकता और स्थिरता का अनुभव करता है। इस कारण से व्यक्तित्व आधारित कैरियर मार्गदर्शन को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में स्वीकार किया गया है।

इस संदर्भ में Holland (1997) का Personality–Career Theory विशेष रूप से उल्लेखनीय है। हॉलैंड के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का एक विशिष्ट व्यक्तित्व प्रकार होता है और विभिन्न व्यवसायों का भी एक विशिष्ट कार्य वातावरण होता है। उन्होंने व्यक्तित्व और कार्य वातावरण के छह प्रमुख प्रकारों (RIASEC मॉडल) का उल्लेख किया है। हॉलैंड का मत है कि जब व्यक्ति के व्यक्तित्व प्रकार और उसके कार्य वातावरण के बीच सामंजस्य स्थापित होता है, तब कार्य–संतोष, कार्य–दक्षता और पेशेगत स्थिरता में वृद्धि होती है। इसके विपरीत यदि व्यक्ति ऐसे कार्य क्षेत्र में प्रवेश करता है जो उसके व्यक्तित्व से मेल नहीं खाता, तो उसमें असंतोष, तनाव और कार्य से विमुखता उत्पन्न हो सकती है।

इसी प्रकार Super (1990) ने कैरियर विकास को एक सतत और जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया के रूप में देखा है। उनके अनुसार व्यक्ति का कैरियर निर्णय उसकी आत्म–अवधारणा (Self-concept) से गहराई से जुड़ा होता है। सुपर का मत है कि व्यक्ति अपने जीवन के विभिन्न चरणों में अपने अनुभवों, क्षमताओं और सामाजिक भूमिकाओं के आधार पर अपनी आत्म–अवधारणा का विकास करता है और वही आत्म–अवधारणा उसके कैरियर चयन को प्रभावित करती है। इस सिद्धांत के अनुसार कैरियर केवल रोजगार प्राप्त करने का साधन नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति की पहचान और आत्म–अभिव्यक्ति का माध्यम भी है।

भारतीय संदर्भ में भी कुछ विद्वानों ने त्रिगुण सिद्धांत (सत्त्व, रजस, तमस) को व्यक्तित्व विश्लेषण के आधार के रूप में अध्ययन किया है। भारतीय दर्शन के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में ये तीनों गुण विभिन्न अनुपातों में विद्यमान रहते हैं और यही गुण उसकी प्रवृत्तियों, रुचियों तथा व्यवहार को प्रभावित करते हैं। विभिन्न अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि सत्त्व गुण की प्रधानता वाले व्यक्ति अधिक संतुलित, विवेकशील और ज्ञानोन्मुख होते हैं, इसलिए वे शिक्षण, अनुसंधान और बौद्धिक कार्यों में अधिक रुचि रखते हैं। इसके विपरीत रजस गुण वाले व्यक्ति अधिक क्रियाशील, महत्वाकांक्षी और नेतृत्व क्षमता से युक्त होते हैं, जिससे वे प्रबंधन, प्रशासन और व्यवसाय जैसे क्षेत्रों में अधिक सक्रिय दिखाई देते हैं। तमस गुण की स्थिरता और संरचनात्मक प्रवृत्ति कार्यान्वयन से जुड़े कार्यों में उपयोगी सिद्ध होती है।

उपरोक्त अध्ययनों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व प्रवृत्तियों और कैरियर चयन के मध्य गहरा संबंध विद्यमान है। जब व्यक्ति अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों, रुचियों और क्षमताओं के अनुरूप कैरियर का चयन करता है, तब वह अपने कार्य में अधिक संतोष और संतुलन का अनुभव करता है। इसी कारण आधुनिक कैरियर मार्गदर्शन में व्यक्तित्व विश्लेषण को एक महत्वपूर्ण आधार माना जाता है। भारतीय दर्शन का त्रिगुण सिद्धांत भी इसी विचार को पुष्ट करता है कि व्यक्ति के गुण और कर्म के मध्य सामंजस्य ही कार्य–संतोष और जीवन–संतुलन का आधार है।

अध्ययन के उद्देश्य

- SRT प्रोफाइलिंग के आधार पर विद्यार्थियों की त्रिगुण का अध्ययन करना।
- त्रिगुण और कैरियर विकल्प जागरूकता के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
- त्रिगुण एवं स्वधर्म सिद्धांत के आधार पर कैरियर मार्गदर्शन का मॉडल प्रस्तुत करना।

परिकल्पनाएँ

- त्रिगुण और कैरियर जागरूकता के मध्य सार्थक संबंध होगा।

शोध पद्धति

- **शोध प्रकारः** वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन
- **नमूनाः** 100 विद्यार्थी
- **उपकरणः** SRT प्रोफाइलिंग मापनी, कैरियर जागरूकता प्रश्नावली.
- **सांख्यिकीय तकनीकः** प्रतिशत, औसत, सहसंबंध

डेटा विश्लेषण

तालिका 1: विद्यार्थियों की त्रिगुण

गुण	आवृत्ति	प्रतिशत
सत्त्व	38	38%
रजस	34	34%
तमस	28	28%
कुल	100	100%

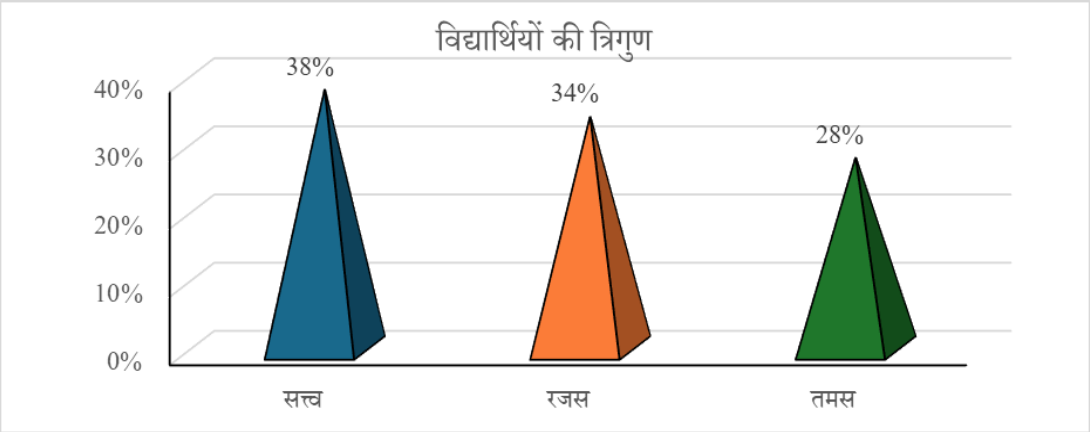

व्याख्याः तालिका से स्पष्ट है कि 38% विद्यार्थियों में सत्त्व प्रवृत्ति प्रमुख है। 34% विद्यार्थियों में रजस प्रवृत्ति और 28% विद्यार्थियों में तमस प्रवृत्ति प्रमुख पाई गई।

तालिका 2: त्रिगुण और कैरियर जागरूकता

गुण	उच्च	मध्यम	निम्न	कुल
सत्त्व	22	12	4	38
रजस	18	10	6	34
तमस	9	11	8	28

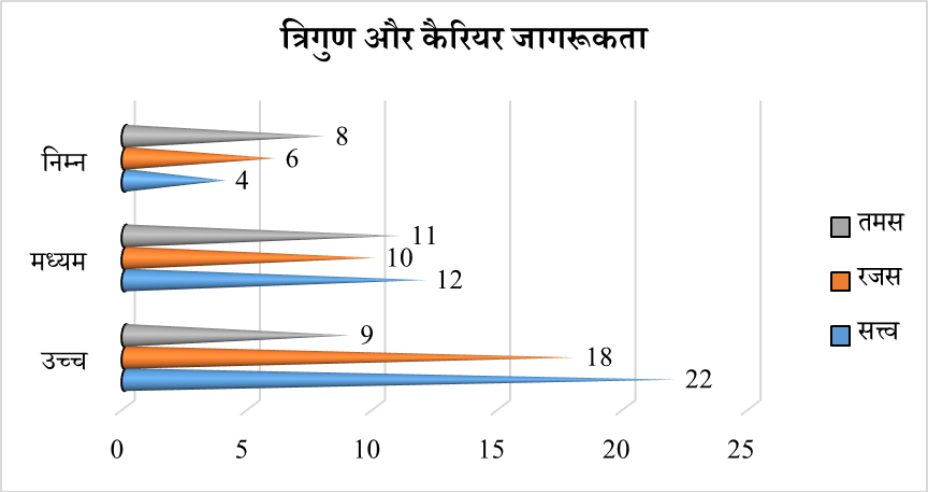

उपरोक्त तालिका में विद्यार्थियों की त्रिगुण (सत्त्व, रजस और तमस) के आधार पर उनकी कैरियर विकल्प जागरूकता के स्तर को उच्च, मध्यम और निम्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। तालिका के अनुसार कुल 100 विद्यार्थियों में से 38 विद्यार्थियों में सत्त्व गुण की प्रधानता पाई गई, जिनमें से 22 विद्यार्थियों में कैरियर जागरूकता का स्तर उच्च, 12 में मध्यम तथा 4 में निम्न पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि सत्त्व प्रवृत्ति वाले विद्यार्थियों में कैरियर संबंधी जागरूकता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक है। सत्त्व गुण ज्ञान, विवेक और स्पष्ट सोच से संबंधित माना जाता है, जिसके कारण ऐसे विद्यार्थी अपने भविष्य और कैरियर विकल्पों के प्रति अधिक सजग और जागरूक होते हैं।

इसी प्रकार रजस प्रवृत्ति वाले 34 विद्यार्थियों में से 18 विद्यार्थियों में कैरियर जागरूकता का स्तर उच्च, 10 में मध्यम तथा 6 में निम्न पाया गया। यह दर्शाता है कि रजस प्रवृत्ति वाले विद्यार्थियों में भी कैरियर विकल्पों के प्रति पर्याप्त जागरूकता पाई जाती है, क्योंकि रजस गुण क्रियाशीलता, महत्वाकांक्षा और उपलब्धि की प्रेरणा से संबंधित है। दूसरी ओर तमस प्रवृत्ति वाले 28 विद्यार्थियों में से 9 विद्यार्थियों में उच्च, 11 में मध्यम तथा 8 में निम्न स्तर की कैरियर जागरूकता पाई गई, जिससे यह संकेत मिलता है कि इस समूह में जागरूकता का स्तर अपेक्षाकृत कम है। समग्र रूप से तालिका से यह निष्कर्ष निकलता है कि त्रिगुण विद्यार्थियों की कैरियर विकल्प जागरूकता को प्रभावित करती हैं, और सत्त्व तथा रजस प्रवृत्ति वाले विद्यार्थियों में कैरियर जागरूकता का स्तर तुलनात्मक रूप से अधिक पाया गया।

तालिका 3: सहसंबंध विश्लेषण

चर	सहसंबंध (r)
त्रिगुण और कैरियर जागरूकता	0.58

व्याख्या: दिए गए सहसंबंध के परिणामों से स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व प्रवृत्ति और कैरियर जागरूकता के बीच 0.58 का सकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ है, जो मध्यम स्तर का संबंध दर्शाता है। इसका अर्थ यह है कि जिन विद्यार्थियों की व्यक्तित्व प्रवृत्ति अधिक जागरूक, सक्रिय और संतुलित होती है, उनमें कैरियर से संबंधित जानकारी, विकल्पों की समझ तथा निर्णय लेने की क्षमता भी अपेक्षाकृत अधिक विकसित होती है। सत्त्व और रजस गुणों की प्रधानता वाले विद्यार्थियों में लक्ष्य निर्धारण, योजना बनाना तथा अपने भविष्य के प्रति स्पष्टता अधिक देखी जाती है, जिससे उनकी कैरियर जागरूकता बढ़ती है। इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि व्यक्तित्व प्रवृत्ति विद्यार्थियों की कैरियर समझ और निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक है।

तालिका 4: त्रिगुण आधारित कैरियर मॉडल

गुण	विशेषता	उपयुक्त कैरियर
सत्त्व (S)	ज्ञान, विवेक	शिक्षक, शोधकर्ता
रजस (R)	नेतृत्व	प्रशासक, प्रबंधक
तमस (T)	स्थिरता	कार्यान्वयन से सम्बंधित (तृतीय एवं चतुर्थ वर्ग के कर्मचारी, कुशल एवं अर्ध कुशल)

- संयुक्त मॉडल: SRT, RST, RTS, TRS

तालिका 5 में प्रस्तुत त्रिगुण आधारित कैरियर मॉडल यह दर्शाता है कि भारतीय दार्शनिक परंपरा के सत्त्व, रजस और तमस गुणों के आधार पर विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त कैरियर क्षेत्रों की पहचान की जा सकती है। सत्त्व गुण वाले व्यक्तियों में ज्ञान, विवेक, संतुलन और बौद्धिकता की प्रवृत्ति अधिक होती है, इसलिए उनके लिए शिक्षक, शोधकर्ता, दार्शनिक या शैक्षणिक क्षेत्र से जुड़े कैरियर अधिक उपयुक्त माने जाते हैं। रजस गुण सक्रियता, नेतृत्व क्षमता, महत्वाकांक्षा और कार्यशीलता को दर्शाता है, इसलिए इस प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों के लिए प्रबंधक, उद्यमी तथा नेतृत्व आधारित व्यवसाय अधिक अनुकूल होते हैं। वहीं तमस गुण उचित देख रेख में कुशल एवं अर्ध कुशल कार्यान्वयन से सम्बंधित कार्यो से जुड़ा होता है, इसके अतिरिक्त वास्तविक जीवन में अधिकांश व्यक्तियों में ये तीनों गुण विभिन्न अनुपातों में पाए जाते हैं, इसलिए संयुक्त मॉडल (SRT, RST, RTS, TRS) यह संकेत करता है कि कैरियर चयन में इन गुणों के मिश्रित स्वरूप को भी ध्यान में रखना आवश्यक है, जिससे विद्यार्थियों को अधिक यथार्थवादी और संतुलित कैरियर मार्गदर्शन प्रदान किया जा सके।

निष्कर्ष

अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि व्यक्तित्व प्रवृत्तियाँ कैरियर चयन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। सत्त्व गुण वाले विद्यार्थी बौद्धिक और विश्लेषणात्मक कार्यों में अधिक सफल हो सकते हैं। रजस गुण वाले विद्यार्थी नेतृत्व और प्रबंधन से जुड़े कार्यों में अधिक सफल हो सकते हैं। तमस गुण उचित नियंत्रण में कुशल अर्धकुशल संरचनात्मक / निर्माण कार्यों में उपयोगी सिद्ध होती है।

अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि त्रिगुण सिद्धांत और स्वधर्म सिद्धांत आधुनिक कैरियर मार्गदर्शन के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान कर सकते हैं। जब व्यक्ति अपनी प्रकृति के अनुरूप कैरियर का चयन करता है, तो जीवन संतुलन में वृद्धि होती है।

सुझाव

- विद्यालयों में व्यक्तित्व आधारित कैरियर मार्गदर्शन प्रारंभ किया जाए।
- SRT प्रोफाइलिंग को कैरियर निर्देशन में शामिल किया जाए।
- विद्यार्थियों में आत्म–जागरूकता विकसित की जाए।

संदर्भ

1. Parsons, F. (1909). *Choosing a vocation.* Boston: Houghton Mifflin.
2. Holland, J. L. (1997). *Making vocational choices: A theory of vocational personalities and work environments.* Psychological Assessment Resources.
3. Super, D. E. (1990). A life-span, life-space approach to career development. In D. Brown & L. Brooks (Eds.), *Career choice and development* (pp. 197–261). Jossey-Bass.
4. Krumboltz, J. D. (1996). A learning theory of career counseling. *Career Development Quarterly*, 44(4), 233–280.
5. Gottfredson, L. S. (1981). Circumscription and compromise: A developmental theory of occupational aspirations. *Journal of Counseling Psychology*, 28(6), 545–579.
6. Radhakrishnan, S. (1923). *Indian Philosophy.*
7. Savickas, M. L. (2002). Career construction: A developmental theory of vocational behavior. *Career Development Quarterly*, 50(3), 149–205.
8. व्यास महर्षि, (2024), श्रीमद्भागवत गीता, गीता प्रेस गोरखपुर

❑❑❑